ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालय वातावरण व उनकी संवेगात्मक अवस्था का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (मन्दसौर जिले के सन्दर्भ में)

*प्रियंका अग्रवाल व **डॉ. जयदीप महार

* शोधार्थी, मन्दसौर युनिवर्सिटी, मन्दसौर , ** प्राध्यापक, मन्दसौर युनिवर्सिटी, मन्दसौर

सारांश–

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय व संवेगात्मक समायोजन का मापन किया गया। इस आयु में बाल्यावस्था की समाप्ति व किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है। यह अवस्था अनेक परिवर्तनों से होकर गुजरती है। बालकों में शारीरिक व संवेगात्मक परिवर्तन के कारण उनका अन्य के साथ व्यवहार में भी अन्तर देखने को मिलता है। शोध के अन्तर्गत विद्यार्थी के विभिन्न परिवर्तित संवेगो व विद्यालय वातावरण की विभिन्न चुनोतियों का वर्णन किया गया है। इन विभिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए विद्यार्थी का स्वयं को समायोजित करना कठिन हो जाता है अतः विद्यार्थी अपने सवेंगो पर नियंत्रण रखते हुए विद्यालय के वातावरण में स्वयं को कितना समायोजित कर पाते हैं व शिक्षक तथा अभिभावक किस प्रकार उनके समायोजन में सहायक हो सकते हैं। इसी को आधार मानते हुए अध्ययन किया गया।

कुंजी शब्द– माध्यमिक स्तर, विद्यालय वातावरण, सवेंगात्मक अवस्था, समायोजन।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा मानव की अन्तर्निहित योग्यताओं को विकसित करके उन्हें समाज सम्मत बनाया जाता हैं। शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों, विशेषताओं, रूचियों व प्रवृत्तियों में अनुभव तथा कौशल से परिवर्तन करती है तथा प्रकृति, मानसिक स्तर, रूचि, बौद्धिक योग्यता, व्यक्तित्व आदि का विकास करती है। माध्यमिक स्तर बालकों की वह अवस्था है, जहाँ बाल्यावस्था की समाप्ति व किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है। इस समय बालक अपने शारीरिक, मानसिक व संवेगाात्मक परिवर्तनों पर नियंत्रण रखते हुए स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करता है। शिक्षा ही है जो मानव को सभ्य बनाती है व समायोजित व्यवहार करना सिखाती है। अच्छे समायोजन वाला व्यक्ति भविष्य में सफल होता है।

समायोजन– परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना या स्वयं को परिस्थिति के अनुकूल बना लेना ही समायोजन है। जो विद्यार्थी अपने वातावरण से जितना अधिक सामंजस्य स्थापित कर लेता है उसके सफलता के आसार उतने अधिक बढ़ जाते है तथा जो विद्यार्थी अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है उसके पथभ्रष्ट होने के आसार बढ़ जाते हैं।

एल. एस. शेफर– "समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।"

अध्ययन की आवश्यकता–

विद्यालय शिक्षा विद्यार्थी बाल्यकाल से किशोरावस्था तक ग्रहण करता है। शरीर में सबसे अधिक बदलाव इसी अवस्था में होता है। इस अवस्था में अत्यधिक शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगता है तथा अनेक समायोजन संबंधी समस्याएं भी उत्पन्न हो जाती है। इस समय शरीर में आये परिवर्तन के कारण वह विद्यालय में भी मित्रों, सहपाठियों, अध्यापकों के साथ असुरक्षित व असमायोजित महसूस करता है। रॉस का कथन है कि इस अवस्था में संवेग अनियंत्रित होते हैं व उनमें कई उतार–चढाव आते हैं अतः ऐसी अवस्था में बालक का अपने संवेगों पर नियंत्रण करते हुए स्वयं को समायोजित करना अत्यन्त कठिन होता है। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण व संवेगों का उतार–चढाव किस प्रकार बालक के समायोजन को प्रभावित करता है इस पर प्रकाश डालने हेतु इस अध्ययन को आधार बनाया गया।

सम्बन्धित पूर्व अध्ययन

1 मिश्रा शालिनी (2009) ने महाविद्यालय कि 18–22 आयु वर्ग की बालिकाओं मे सवेंगात्मक परिपक्वता व समायोजन स्तर का अध्ययन। विषय पर शोध कार्य किया व पाया कि–

सवेंगात्मक परिपक्वता व समायोजन के मध्य (सहसंबंध गुणांक 0.78) सार्थक रूप से उच्च धनात्मक सहसंबंध होता है।

2. गौड अश्विन कुमार (2012) ने प्राथमिक विद्यालयों मे कार्यरत अध्यापकों के व्यक्तित्वशील गुणों का कक्षा कक्ष सम्पादन के परिप्रेक्ष्य मे एक अध्ययन। विषय पर शोध कार्य किया व पाया कि–

महिला अध्यापक पुरूष अध्यापकों कि तुलना मे कम समायोजित थी।

शिक्षण अनुभवी व कम शिक्षण अनुभवी शिक्षक समान रू‍प से समायोजित थे।

3. चोहान वंदना (2013) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन पर एक अध्ययनं। विषय पर शोध कार्य किया व पाया कि–

उचच माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन मे महत्वपुर्ण अंतर छात्र की अपेक्षा छात्राओं मे अच्छा समायोजन था।

अध्ययन के उद्देश्य

1 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालयी वातावरण का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2 ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संवेगात्मक अस्थिरता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में मन्दसौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है। यादृच्छिक चयन विधि का उपयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों को लिया गया व प्रत्येक विद्यालय में से 10–10 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अतः न्यादर्श के लिए कुल 100 विद्यार्थियों को लिया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया जिसमें प्रश्नावली को दो भागों में बनाया गया, विद्यालय समायोजन व संवेगात्मक समायोजन। प्रत्येक भाग में 10–10 प्रश्न हैं। प्रश्नावली में कुल 20 प्रश्न हैं जिनका उत्तर विद्यार्थियों को "हाँ" या "नहीं" में देना है।

प्रदत्त संकलन विधि

शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का संकलन विद्यालय के प्राचायों से अनुमति प्राप्त कर सोहार्दपूर्ण वातावरण में किया गया। विद्यार्थियों से समायोजन से संबंधित प्रश्नावली भरवायी गयी व प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत के आधार पर किया गया।

परिणाम व विवेचना

सारणी क्र. 1

क्र. स.	**विद्यालयी समांयोजन**
1	परिणामों के अनुसार 91 प्रतिशत विद्यार्थियों को कक्षा में खडे होने से डर नहीं लगता है व 9 प्रतिशत विद्यार्थियों को डर लगता है।
2	परिणामों के अनुसार 58 प्रतिशत विद्यार्थियों को अध्यापक की डाट अपमानजनक लगती है व 42 प्रतिशत विद्यार्थियों को डाट बुरी नहीं लगती है।
3	परिणामों के अनुसार 81 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय में अनुशासनहीनता के कारण दण्ड नहीं मिलता है व 9 प्रतिशत विद्यार्थी अनुशासनहीनता के कारण दण्ड मिलता है।
5	परिणामों के अनुसार 92 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेना अच्छा लगता है व 8 प्रतिशत विद्यार्थी भाग नहीं लेते हैं।

6	परिणामों के अनुसार 97 प्रतिशत विद्यार्थियों को विद्यालय में सभी पसन्द करते हैं व 3 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्हें सभी पसन्द नहीं करते है।
7	परिणामों के अनुसार 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों से ईर्ष्या होती है व 20 प्रतिशत विद्यार्थियों को अधिक अंक लाने वाले विद्यार्थियों से ईर्ष्या नहीं होती है।
8	परिणामों के अनुसार 89 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय से नहीं भागते हैं पर 11 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय से भाग जाते है।
9	परिणामों के अनुसार 96 प्रतिशत विद्यार्थी के सहपाठी पढाई में उनकी सहायता करते हैं व 4 प्रतिशत विद्यार्थी के सहपाठी पढाई में उनकी सहायता नहीं करते हैं।
10	परिणामों के अनुसार 94 प्रतिशत विद्यार्थियों को अपने विद्यालय का विद्यार्थी होने में गर्व है व 6 प्रतिशत विद्यार्थियों को अपने विद्यालय का विद्यार्थी होने में गर्व नहीं है।

सारणी क. 2

क. स.	**संवेगात्मक समायोजन**
1	के अनुसार 56 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी अन्य के साथ आसानी से बाँट लेते हैं किन्तु 44 प्रतिशत विद्यार्थी आसानी से नहीं बाँट पाते हैं।
2	के अनुसार 96 प्रतिशत विद्यार्थी किसी अन्य को दुखी देखकर स्वयं भी दुख का अनुभव करते हैं किन्तु 4 प्रतिशत विद्यार्थी दुख का अनुभव नहीं करते हैं।
3	के अनुसार 72 प्रतिशत विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर चिन्ताग्रस्त रहते हैं किन्तु 28 प्रतिशत विद्यार्थी अपने भविष्य को लेकर चिन्ताग्रस्त नहीं हैं।
4	अनुसार 28 प्रतिशत विद्यार्थी बहुत जल्दी थक जाते हैं किन्तु 72 प्रतिशत विद्यार्थी को जल्दी थकान नहीं होती है।
5	के अनुसार 77 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी बात को दूसरों के समक्ष आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करते हैं व 23 प्रतिशत विद्यार्थी अपनी बात को आत्मविश्वास के साथ नहीं रख पाते हैं।
6	के अनुसार 80 प्रतिशत विद्यार्थी छोटी–छोटी बातों पर जल्दी आक्रामक हो जाते हैं किन्तु 20 प्रतिशत विद्यार्थी स्वयं पर नियंत्रण रखते हैं।
7	के अनुसार 34 प्रतिशत विद्यार्थियों को विपरित लिंग से बात करने में झिझक होती है किन्तु 66 प्रतिशत विद्यार्थी विपरित लिंग से आसानी से बात कर पाते हैं।
8	के अनुसार 60 प्रतिशत विद्यार्थियों को किसी के द्वारा की गयी अपमानजनक बात अधिक समय तक परेशान करती है व 40 प्रतिशत विद्यार्थियों को किसी की अपमानजनक बात अधिक समय तक परेशान नहीं कर पाती है।
9	के अनुसार 27 प्रतिशत विद्यार्थी किसी अजनबी से आसानी से घुल–मिल जाते हैं किन्तु 73 प्रतिशत विद्यार्थी अजनबी से आसानी से नहीं घुल–मिल पाते हैं।
10	के अनुसार 12 प्रतिशत विद्यार्थी थोड़ी सी निराशा होने पर हार मान लेते हैं किन्तु 88 प्रतिशत विद्यार्थी जल्दी हार नहीं मानते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि–

1 कुल विद्यार्थियों में से 87 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में समायोजित पाये गये किन्तु 13 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में स्वयं को समायोजित करने में सफल नहीं हो पाए।

2 कुल विद्यार्थियों में से 67.6 प्रतिशत विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से समायोजित पाये गये किन्तु 32.4 प्रतिशत विद्यार्थी स्वयं को संवेगात्मक रूप से समायोजित नहीं कर पा रहे हैं।

सुझाव

किशोर, देश की अमुल्य धरोहर है। किशोरों का विकास, देश को उत्तम नेतृत्व प्रदान करता है और समाज को अच्छे नागरिक प्रदान करता हैं। अतः शिक्षक व अभिभावक उनकी स्थिति को समझने व उन्हें परिवर्तन के साथ समायोजित होने में निम्न प्रकार से सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

1 सामुहिक योजना विधि द्वारा शिक्षण, सामुहिक कार्य, स्काउटिंग, गाईडिंग, आदि के द्वारा बालकों को स्वच्छ विद्यालय वातावरण प्रदान कर समायोजन हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

2 पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन कर बालकों के संवेगों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

3 शिक्षक व अभिभावकों को बालको के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करने व उन्हें काम की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए जिससे उनमें आत्मविश्वास बढे व समायोजन की क्षमता का विकास हो।

संदर्भ

1 डा. एस. एस. माथुर, शिक्षा मनोविज्ञान, 2013, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

2 पी. डी. पाठक, शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक भण्डार, आगरा।

3 विपिन अस्थाना, शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।